TC/RAJ/RAJ/00095

अपरंच

राजस्थानी भासा अर साहित्य री तिमाही

अक्टूबर-दिंसबर 2015

सलाहकार मंडल

मोहन आलोक, गंगानगर

नंद भारद्वाज, जयपुर

डॉ. आईदान सिंह भाटी, जोधपुर

डॉ. नीरज दइया, बीकानेर

संस्थापक संपादक

स्व. पारस अरोड़ा

संपादक

गौतम अरोड़ा

विदेसी कविता विसेसांक

संपादन सैयोग

शंकरसिंह राजपुरोहित, बीकानेर

डॉ. मदन गोपाल लढ़ा, महाजन

प्रह्लाद राय पारीक, पीलीबंगा

गौरीशंकर कुलचंद्र, हनुमानगढ़

ओम नागर, कोटा

मुखौळ : **स्व. पारस अरोड़ा** जोधपुर

टाइप सैटिंग : **भंडारी ऑफसेट** जोधपुर

अंतरजाळ अंक संचालक : **डॉ. नीरज दइया** बीकानेर

साज सज्जा : **रमेश व्यास** जोधपुर

सगळा पद अवैतनिक

सदस्यता

अेक अंक रौ मोल : 30 रिपिया

अेक बरस रौ मोल : 100 रिपिया

तीन बरस रौ मोल : 250 रिपिया

आजीवन : 1100 रिपिया

प्रकासक

अपरंच प्रकासण

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)

दूरभास : 0291-2720796, 7877982810, 9413961800

e-mail : apranchrajasthani@gmail.com

web : www.apranch.wordpress.com

जात्री सुर

(विदेसी कवितावां रौ राजस्थानी उल्थौ)

उल्थाकार

पारस अरोड़ा

विगत

भासा	कविता	कवि	पृष्ठ
तुर्की	वा बोली	नाज़िम हिक़मत	6
ब्राजीली	प्रार्थना	म्यूरियल मेंद	7
ब्राजीली	प्रार्थना	जान गोल्सवर्दी	8
जर्मन	उण वगत अर इण बगत	होल्डर लिन	9
जर्मन	प्रेम री कविता	रेनेर मेरिया रिलके	10
क्यूबन	मां विदा दै !	प्लेसिडो	12
रूसी	साथी लेखकां सूं	ब्लादिमीर मायकोवस्की	13
रूसी	अैड़ै ऊंचै क्षणां में	ब्लादिमीर मायकोवस्की	15
जमर्न	बापड़ो बी.बी.	बरतोल्त ब्रैख्त	16
अमरीकन	अर युद्ध नुंवौ व्है या पुराणौ	कार्ल सैण्डबर्ग	18
क्यूबन	सिपाई री लास	निकोलस गोलियन	19
बीटनीक	हाडका	जैक केरुएक	20
ग्रीक	कवि	रेम्को कैम्फर्ट	21
रूसी	गांव	बोरिस पास्तरनाक	23
स्पेनिश	आत्महत्या	गार्सिया लोर्का	24
युगोस्लाव	रेलगाडी	इवान इवानवी	25
मैक्सिकन	लपट	आक्टेवियो पाज़	26
चिलीयन	बुण रयी हूं अेक सरीर	गैब्रेला मिस्ट्राल	28
चिलीयन	हरेक चीज सारू म्हनै माफ कर दो !	गैब्रेला मिस्ट्राल	29
ब्राजीली	ओळख	सेसीलिया मिरले	30
ब्राजीली	दूजौ जीवण	कैसियानो रिकार्डो	31
डेनिस	भुलाव	पॉल बॉरम	32
हिन्देशियाई	थोथप	चयरिल अनवर	33
हिन्देशियाई	विदा	चयरिल अनवर	34
मैक्सिकन	घणा पैली रौ बसंत	लूई कारनूदा	35
कामनवेल्थ (ब्रि.गा.)	अगनी पुसप ! थूं पाछौ आव	मार्टिन कार्टर	36

कामनवेल्थ (वेल्स)	धोळी सिलावां री घाटी	पॉल इवान्स	38
कामनवेल्थ (केन्या)	उपद्रववाळौ क्षेत्र	जे. एच. चेपलीन	40
रूसी	ईसको	येवजेनी येवतुशेंको	41
रूसी	इतिहास	अलेक्सेई सुर्कोव	43
अरबी	अरदास	इब्न-अल-अरबी	45
हंगेरियन	कविता रै अनुकूल घर	मिकलोस रादनोती	47
हंगेरियन	पिक्चर पोस्टकार्ड	मिकलोस रादनोती	50
पेरू (स्पेनिश)	तीन कवितावां	सेजार वेलेजो	53
जर्मन	निजू-भासा	ह्यूगो वान हाफ़मान्स्थल	57
अमरीकन	समापन रा बोल	अेजरा पाउंड	58
अमरीकन	अेक छोरी	अेजरा पाउंड	59
अमरीकन	जीवणकाळ	विलियम कार्लोस विलि.	60
अमरीकन	बडेरां री पीड़	अेल्फ़ाज़िना स्टार्नी	61
बलगेरियन	इतिहास रै नांव	निकोला वाप्सारोव	62

● *सम्पादक री बात*

सै कीं थिर व्हैगौ

31 अक्टूबर, 2015 नै सवार रा चार बजियां म्हारै सारू सैं कीं थिर व्हैगौ। घर सूं फोन आयौ कै पारस जी अबै आपां बिचाळै नीं रैया। उण बगत म्हैं जयपुर री ट्रेन मांय हौ, रात तांई सब सागै हा अर पारस जी स्वस्थ, हंसता-बोलता हा। जयपुर पूगतां पाण ईज पाछौ जोधपुर सारू व्हीर व्हियौ। पारस जी री इच्छा मुजब वांरी देह मेडीकल रा शोधार्थियां सारू मेडीकल कॉलेज जोधपुर नै दान करीजी।

आपरै पिता रौ जाणौ सब नै घणौ दुख देवै, पण म्हारै सारू वै फकत म्हारा पिताजी ईज नीं हा। पारस जी म्हारै सारू म्हारा पिता, गुरु, भाई, मित्र अर अपरंच रै पाण सहकर्मी भी हा। पारस जी 'अपरंच' 1978 रै मांय श्री अर्जुन देव चारण रै सागै मिल'र निकाळी। पैलै बरस रा च्यार अंकां रौ संपादन दोनूं मिल'र करयौ। 1978 सूं 1980 तांई अपरंच रा नौ अंक सांमी आया। पछै आर्थिक कारणां सूं अपरंच रौ काम आगै नीं बध सक्यौ। 1989 रै मांय अेकर फेरूं सोळा पेज री पत्रिका रै रूप 'अपरंच' काढण री खेचळ करीजी, पण अेक अंक पछै काम आगै नीं बध सक्यौ। पारस जी रै मन मांय आ बात हमेस रैयी कै पत्रिकावां निकळणी चाईजै अर पत्रिकावां राजस्थानी भासा मान्यता आंदोलन रौ महताऊ पख है। सेवट सन् 2012 मांय 'अपरंच' पाछी सरू व्ही, चार अंकां रै संपादन पछै 2013 मांय पारस जी री इच्छा मुजब म्हैं 'अपरंच' रै संपादन मांय वांरै सागै जुड़ग्यौ अर 2013 मांय रंगीन कवर सागै मौजूदा रूप री 'अपरंच' सांमी आई अर तद सूं आज तांई अपरंच लगोलग छप रैयी है।

2013 मांय जद सूं म्हैं अपरंच रौ काम देखणौ सरू करयौ तद सूं पारस जी म्हारै सागै अेक गुरु अर सहकर्मी रै भांत व्यवहार राखियौ। म्हारी व्याकरण री कमजोरी जाणता थकां वै जाण'र पैली म्हारै सूं अपरंच रा प्रूफ पढवावता अर पछै खुद उण मांय गलती काढ'र म्हनै सिखावता।

पारस जी अनुवाद रै पेटै घणौ काम करयौ। आ बात न्यारी है कै वांरै काम री बगतसर कूंत नीं होय सकी। वांरै अनुवाद करयोड़ी रचनावां 'माणक', 'जागती जोत' अर दूजी राजस्थानी पत्रिकावां मांय लगोलग छपती रैयी। वै स्टिफन ज्विग रै उपन्यास 'विराट' रौ भी राजस्थानी उल्थौ करयौ जकौ उण बगत 'माणक' मांय छप्यौ। राजेश जोशी री लांबी कविता 'समरगाथा' रौ भी वै राजस्थानी मांय अनुवाद करयौ जिकौ पैलां 'अपरंच' मांय अर पछै किताब रूप छप्यौ। मंगलेश डबराल रै गद्य काव्य संग्रह 'हम जो देखते हैं' रौ राजस्थानी उल्थौ 'म्हां जिकौ देखां' 2013 मांय साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली सूं छप्यौ। पारस जी री केई विदेसी भासावां रै कवियां री कवितावां रौ राजस्थानी मांय उल्थौ करयौ, जिकौ केई पत्र-पत्रिकावां मांय छपतौ रैयौ। अपरंच रै इण अंक मांय म्हैं वांरै इण महताऊ काम नै अंवेरण री कोसीस करी है।

लारला दिनां 'अपरंच' रा अंक बगतसर नीं निकळ्या है, इण सारू माफी चावूं, म्हारै सारू सै कीं थिर है, कोसिस है कै अेकर फेरूं सैं कीं चेतन व्है।

—गौतम अरोड़ा

जलम : 15 जनवरी 1902
निधन : 3 जून 1963

●तुर्की

नाज़िम हिक़मत

वा बोली

अठी आवौ
वा बोली अर
रुकौ वा बोली
अर मुळकौ
वा बोली अर
मरो वा बोली
म्हैं आयौ, म्हैं रुकियौ
म्हैं मुळक्यौ
म्हैं मरगौ।

⌘⌘

(पहल / पोस्टर)

●ब्राजीली

जलम : 13 मई1901
निधन : 13 अगस्त 1995

म्यूरियल मेंद

प्रार्थना

थूं महान है
थारी महिमा अपरंपार है
इण सारू नीं के थारी माया सूं
दिन में सूरज चमकै—
अर रात में सितारा
इण सारू नीं के थूं संसार बणायौ
उणरौ वैभव बणायौ—
खेतियां-पुसप-सिनेमा-रेलां
इण सारू नीं के थूं समंदर बणायौ
उणरौ वैभव बणायौ—
माछळ्यां, बूंटा, पनडुब्बियां
अर जळपरियां।
म्हैं थनै इण सारू महान् मानूं हूं
के थूं खुद नै छोटो बणाय लेवै है
इतरो छोटो के, हूं कमजोर अर भाग्यहीण
म्हारै मांय थनै मौजूद पाऊं हूं।

⌘⌘

(नवनीत, नवंबर, 1960)

जलम : 14 अगस्त 1867
निधन : 31जनवरी 1995

●ब्राजीली

जान गोल्सवर्दी

प्रार्थना

किणी बसंती रात में
म्हैं निकळूं घूमण सारू
अर म्हनै मिळ जावै
भगवान
किणी रूंख हेठै
किसी प्रार्थना उण वगत
म्हारै मूंडै सूं निकळै ?

म्हारी प्रार्थना आ व्है
के
सुविचारित हिम्मत रा स्वामी !
बसंती रात रा हे स्रस्टा !
कर दो म्हारो हिवड़ौ
इतरो मजबूत
के
नीं मांगूं म्हैं थांसूं
कदै कोई चीज।
⌘⌘

(नवनीत, नवंबर, 1968)

●जर्मन

जलम : 20 मार्च 1770
निधन : 7 जून, 1843

होल्डर लिन

उण वगत अर इण वगत

टाबरपणै में
हर सवार म्हनै खुसी सूं भर जावती
पण हर सांझ म्हारी आंख्यां सारू नमी लावती।
अर अबै उमर वधियां पछै—
हरेक दिन वैम सूं सरू होवै है
पण उणरौ अंत—
कितरौ निर्मळ—कितरौ पवित्र!

⌘⌘

(कविताएँ 2/4)

जलम : 4 दिसंबर 1847
निधन : 19 दिसंबर 1926

●जर्मन

रेनेर मेरिया रिलके

प्रेम री कविता

म्हारा दोन्यूं नैणां री जोत बुझाय दे
तो ई थूं म्हारी निजर में रैवैला।

इतरौ हाकौ व्है के कीं नीं सुणीजै—
तौ ई जद थूं बुलावैला
तौ म्हनै आपरै कनै पावैला।

पंगु व्हैतां सांतर ई
थारी ऊंचाइयां तांई पूग जावूंला
बिना मूंडै रै ई
थारा गुण-गीत गाऊंला।

म्हारी दोनूं भुजावां तोड़ दै
तौ ई म्हारै हिड़दै सूं— हाथां री तरै
थनै फेर बांध लेवूंला।

म्हारै हिड़दै री धड़कण नै जकड़ दै।

म्हारै मगज री धमनियां मांय
वा इज धड़कण पैदा हुय जावैला
अर जे थूं म्हारै मगज में ई अगन फूंक देवैला
तौ म्हैं थनै म्हारी नाड़ियां रै रगत में रमाय लेवूंला।

⌘⌘

जलम : 21 जनवरी 1947

●क्यूबन

प्लेसिडो

मां विदा दै

कांई हुयो मां, जे दुरदिन में हुय रैयौ है, भाग म्हारौ अस्त!
समाप्त इतिहास म्हारै जीवण री पीड़ रौ,
जीवण-चक्र रौ काळ इत्तौ छोटौ!
मां, थारै अंतर में उठैला पीड़ री हूक!
रो मत मां! म्हारै वास्तै दुखी व्है मती!
सांती सूं मिरतु रौ करूं हूं वरण,
वरण गौरवपूरण काळ रौ!

इणसूं पैली के म्हारी जीवण-वीणा हुय जावै सांत
थारै सारू उण माथै अेक स्वर छेड़ दूं।
मिरतु गीत रौ स्वर,
अेक अैड़ौ स्वर जिकौ कर देवैला पीड़ री आह नै मंदी,
ठीक विसी इज पवित्र, निस्कळंक,
विस्वासू अर भावमयी पीड़ा
जैड़ी के थनै म्हारै जलम री बगत हुई ही मां!
अर अबै पाछौ औ बगत है!
हे प्रभु! बगस दै म्हारा पाप, अभय दै!
मां विदा दै!
यात्रा रौ बगत हुयगौ है।

⌘⌘

(कविताएँ 1/5)

●रूसी

ब्लादिमीर मायकोवस्की

जलम : 19 जुलाई 1893
निधन : 14 अप्रैल 1930

साथी लेखकां सूं

लागै है के
'ब्रिस्टल' में बैठणै री
'बार' रै किनारै ऊभा रैवण री
आदत म्हनै नीं पड़ सकै।
म्हैं प्यालियां नै उलट देवूंला
मेज माथै मुक्कौ मार कैवूंला :
''सुणौ साहित्तिक साथियां!
बैठा थे
चाय में आंख्यां गडायां,
कलम घिसतां-घिसतां
थांरी मखमली खूणियां घिसगी।
प्यारां
सबदां हाथ पकड़्या थे क्यूंकर,
जिकौ चिप्योड़ा इज रैवौ हो
भींतां
अर भींतां रा कागदां सूं?
थांनै पतौ है कांई
'फ्रांक्वाय बिला' लिख'र
म्हैं लागगौ हो लूट रै काम में?
अर थे, जिका के पेंसिल रा
चक्कू नै देख'र धूज जावो हो,
मध्य-युग रा संरक्षक कैवीजण रा
दावेदार हो;
आज रै बारै में लिखण सारू

थांरै कनै है कांई, बोलौ ?
किणी सोलीसिटर रै सहायक नै
जिंदगाणी में
सौगुणा वत्तौ मजौ आवै है।
सभ्य कविगण!
हाल तांईथांरौ मन नीं भरीजियौ
दूतां सूं, मै'लां सूं, प्रेम सूं
थांरै जैड़ा लोग इज जे
हुया करै है कवि तौ पछै म्हैं
थूकूं हूं सगळी कळा माथै!
उणरी जगै म्हैं खोलूंला दुकान,
लागूंला सट्टैबाजी में,
अर खुद कनै मोटा-तगड़ा नौकर
जोड़ूंला।
किणी सराय रै लारली कानीं
आपरी आत्मा री उल्टी करूंला
दारूड़ी राग में!
कांई इण मुक्कै रौ असर होवैला ?
कांई औ थांरा बाळां री नोकां रै मांय
घुस सकैला ?
पण थांरा बाळां रै जंगळ नीचै
कोरो अेक इज विचार है :
बाळां नै संवारणा! पण अै किण सारू ?
थोड़ै इज समै सारू,
तद फळ री तुलना में मैणत वत्ती है
अर अणंत काळ तांई
बाळां में संवार रैवै,
औ संभव नीं है!''

⌘⌘

(सुप्रभात, सितंबर, 1957)

अैड़ै ऊंचै क्षणां में

अेक रौ टंकोरौ बाजगौ
रात अवाजहीण है
अर, अै क्षण थूं नींद नै भेंट कर चुकी व्हैला।
आकास गंगा चांदणी में धुप'र
औरूंवूं धोळी व्हेयगी व्हैला।

आं सगळा पळकता संकेतां रै प्रति
म्हैं अणुत्तरित हूं, स्फूर्तिहीण!
सोचूं हूं— म्हैं थनै क्यूं जगाऊं, कीकर दूं कोई तकलीफ?
अर लोग तो कैवै इज है के
अध्याय समाप्त हुयगो है
नित रा निर्मम थपिड़ा सूं
निकामी हुयगी है प्रीत री नाव,
म्हां अबै रैयगा हां— सबदहीण।
पछै क्यूं हुवां आपसरी रै संवेदित
क्यूं नीं मान लेवां होणी री देण
(जिको ई कीं देवै।)
तारा भर दियो अंबर नै रात री भुजावां में,
अेक रौ टंकोरौ बाजगौ
रात सबदहीण है।
अैड़ा ऊंचा क्षणां में इज तौ
कोई उठ सकै इत्तौ के
बतळाय सकै—
काळ नै, इतिहास नै
अर सकळ स्रस्टी नै।

⌘⌘

जलम : 10 फरवरी 1898
निधन : 14 अगस्त 1956

●जर्मन

बरतोल्त ब्रैख्त

बापड़ो बी.बी.

म्हैं, बरतोल्त ब्रैख्त, काळा जंगळां रौ निवासी हूं।
मां म्हनै पेट में लियां इज नगर में आयगी ही।
अर जठा तांई म्हैं झड़ नीं जाऊं,
जंगळां री ठंड म्हारै सूं अलग नीं व्हैला।

कोलतार रै नगर में म्हैं प्रसन्न इज हूं,
म्हैं सरू सूं इज मौत रा सगळा प्रतीकां समेत हूं :
समाचार पत्रां सूं, दारू सूं, अर तम्बाकू सूं
संदेही अर आळसी अर आखिरकार संतोसी।

लोग म्हनै परसण करै है। म्हैं वांरी
रीत रै मुजब 'बाउलर टोप' लगाऊं हूं।
म्हैं कैवूं के बडा नुक्ताचीण लोग है अै!
पण कोई बात नीं, म्हैं खुद अैड़ौ इज हूं।

सवार री बगत कदै-कदै म्हैं कीं लुगायां नै
म्हारी झूलणी कुर्सियां माथै बैठाय'र राजी-राजी
वांनै देखतौ रैवूं हूं अर वांनै कैवूं;
म्हैं अैड़ौ आदमी नीं हूं जिण माथै विस्वास कर सकौ।

सिंझ्या रा म्हैं म्हारै कनै पुरसां नै भेळा करूं हूं।
म्हां सगळा अेक-दूजा नै 'श्रीमान्' कैय'र बतळावां हां।
वै म्हारी मेज माथै पग पसारनै बैठै अर कैवै :
जल्दी इज सब ठीक हुय जावैला। पण कद, म्हैं औ नीं पूछूं।
सवार री भूरी उरमा में देवदार उदासी सूं हिलण लागै अर
पंखेरू नै वांरा टाबर रोवण लाग जावै, उण बगत म्हैं
नगर में म्हारो गिलास खतम करूं हूं अर सिगार
फेंक'र चिंतित मुदरा में सोवण नै जाऊं परो हूं।

यां नगरां सूं जिको गुजरै है, बो इज बाकी रैवैला— यानी हवा
लोग घर में प्रसन्न रैयनै ई उणनै खाली कर जावै है
म्हांनै पतौ है के म्हां भूमिका मात्र हां अर म्हाणै पछै
अठै जिकी वस्तु आवैला— वा उल्लेखजोग नीं होवैला।

आगामी धराकम्प में म्हनै आसा है के
खारास रै कारण म्हैं म्हारी सिगरेट नीं फेंकूंला—
म्हैं, बरतोल्त ब्रैख्त, काळा जंगळां सूं घणा समै पैली
मां रै पेट में रैवतां थकां इज, कोलतार रा नगरां में
फेंकीजियो।

⌘⌘

(लहर, विश्व कवितांक)

जलम : 6 जनवरी 1878
निधन : 22 जुलाई 1967

●अमरीकन

कार्ल सैण्डबर्ग

अर युद्ध नुंवौ व्है या पुराणौ

आस्टरलीज व्है या वाटरलू
लासां रौ ऊंचा सूं ऊंचौ ढिग व्है—
दफनाय दो, अर म्हनै म्हारौ काम करण दौ!
म्हैं घास हूं, म्हैं सगळां नै ढक लेवूंला।

अर युद्ध रौ छोटौ मैदान व्है या मोटौ
अर युद्ध नुंवौ व्है या पुराणौ
ढेर ऊंचा सूं ऊंचौ व्है, बस म्हनै मौकौ मिळ जावै
दो बरस, दस बरस— अर पछै उठी सूं
निकळण वाळी बस रा मुसाफिर
पूछैला : आ किसी जगा है?
म्हां कठी सूं होय'र गुजर रैया हां?
औ घास रौ मैदान किस्यौ है?

म्हैं घास हूं
सबनै ढक लेवूंला!

⌘⌘
(ज्ञानोदय, युद्ध विशेषांक)

●क्यूबन

जलम : 10 जुलाई 1902
निधन : 16 जुलाई 1989

निकोलस गोलियन

सिपाई री लास

वौ किण गोळी सूं मरियौ ?
कुण जाणै
वौ कठै जलम्यौ हो ?
कैवै के 'जावेलावों' में !
वौ मिळियौ कठै
सड़क माथै मरियोड़ौ पड़्यौ हो
साथियां देख्यौ, उठाय लियौ
उणरी प्रेमिका आई है, उणनै चूम रैयी है।
उणरी मां आई है, रोय रैयी है
अफसर आयौ है—
'दफन करौ इणनै'
र-ट-टर-रट
वौ मर्‌योड़ौ सिपाई रैयौ है
र-ट-टरट-टरट
सिपाई रौ कांई महत्त्व
र-ट-टर-टर
सिपायां री कोई कमी है !

⌘⌘

जलम : 12 मार्च 1922
निधन : 21 अक्टूबर 1969

जैक केरुएक

हाडका

म्हैं
साफ-साफ
देख्यौ
इण
सगळै
व्यक्तित्व
दरसाव
रै हेटै छिप्योड़ौ हाड-पिंजर
मिनख
अर उणरै गरब रौ
सेवट
हाडकां रै सिवाय
कांई बाकी रैवै है ?
रात्यूं-रात उणरै नाच रौ
पीपा भर-भर दारू रौ
जिकौ उणरै गळै नीचै उतरगौ
हा....ड....का
कब्र में वो
सड़ै है
कीड़ा उणनै
खावता रैवै है।

⌘⌘

(लहर, विश्व कवितांक)

●ग्रीक

रेम्को कैम्फर्ट

जलम : 29 जुलाई 1929

कवि

पूरौ तोपखानौ
अेक हाथ में लियां
प्रार्थनावां सूं गूंजतै
काळै आकास रै नीचै
म्हैं ऊभौ हूं।

अेक कोरी भींत माथै
लोग लिख दियौ :
'संकट'
कोई आखर अधूरौ नीं हो।

वांनै म्हारी आंख्यां माथै विस्वास नीं रैयौ,
म्हारी दीठ माथै भरोसौ छोड'र
वै म्हनै अेक घर में भेज दियौ।

अेक घर में जठै दांत सड़ रैया हा,
जिकौ चारूंमेर पाणी सूं घिरियोड़ौ हो।
पण जिणरौ धुंआकस चिड़ियां सूं भरियोड़ौ
अेक जूनौ टूटतौ धुंआकस
जिकौ चिड़ियां सूं जीवतौ हो।

उणरी अेक भींत सफेद ही
पछै उठै अेक नाव ई आयगी
घर-घर जावण वास्तै।

वै म्हनै घरै भेज दियौ
अेक हाथ में
आवाजां भरियौ थैलौ
अर दूजा में
पूरौ तोपखानौ देय'र

⌘⌘

(हेमांणी, परंपरा विशेषांक / लहर, विश्व कवितांक)

●रूसी

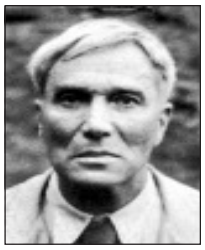

बोरिस पास्तरनाक

जलम : 10 फरवरी 1890
निधन : 30 मई 1960

गांव

हाकौ थमगौ है। म्हैं रंगमंच माथै आयगौ हूं।
बारणै रै चोखटै माथै झुक'र
म्हैं आधी दूर सूं आवती आवाज में
आ सुणण री कोसीस करूं हूं
के जीवण में कांई-कांई बीतैला!

हजारूं ऑपेरा-झरणा सूं रात रौ
सरबग्रासी अंधारौ म्हारै ऊपर जम रैयौ है।
दादोसा, बापू, जे औ व्हेय सकै तौ
औ प्यालौ म्हारै सांम्ही सूं हटाय लौ।

थांरौ औ कठोर नाटक म्हनै रुचै है
अर म्हैं औ सांग करतौ ई राजी हूं।
पण औ दूजौ नाटक सरू व्हैय रैयौ है
इणमें म्हनै म्हारी इंछा सूं करण दौ।

द्रस्यां रौ क्रम तै होय चुकौ है
अर मारग रौ अंत ई तैसुदा है।
म्हैं अेकलौ हूं, सरबस डूबतौ जाय रैयौ है।
जिंदगाणी में चालणौ, मैदान में चालणौ नीं है।

⌘⌘

●स्पेनिश

जलम : 5 जून 1898
निधन : 19 अगस्त 1936

गार्सिया लोर्का

आत्महत्या

(जिकी इण कारण हुई के थे थांरी ज्यामिति नीं जाणता हा)

टाबर चेतौ खोय रैयौ हो।
सवार रा दस बज रैया हा।
उणरौ हियौ भरीजगौ हो
टूटोड़ा पंख, कुमळीज्योड़ा फूलां सूं।
उणनै लखायौ के उणरै मूंडै में
अेक इज सबद बाकी रैयौ है
जद वौ दस्ताना उतारया
कंवळी राख उणरै हाथां सूं खिरी।
बारी मांय सूं अेक मीनार निजर आवती ही।
वौ खुद नै बारी अर मीनार महसूस कियौ।
वौ देख्यौ के सांम्ही राख्योड़ी घड़ी
थिर निजर उणनै देख रैयी है।
रेसम रा धोळा ढिगला माथै
वौ आपरी चुपचाप सूतोड़ी छांवळी देखी।
करड़ौ ज्यामितिक टाबर
हथोड़ा सूं दरपण चूर-चूर कर न्हाख्यौ।
उणरै टूटतां इज छांवळी री अेक लांबी धारी
झूठै विश्रामघर माथै हमलौ करण लागी।

⌘⌘

●युगोस्लाव

जलम : 20 मई 1731
निधन : 12 अगस्त 1789

इवान इवानवी

रेलगाडी

कुण जाणै, कोई सिद अर क्यूं जावै है,
कद, कीकर अर किण भेळौ वौ भिळ जावैला ?
सगळा ग्रह नक्षत्र आकास रै मांय
आपरी अणबीतणी जात्रा में
बिना कठैई पूग्यां, बैवता रैवै है।

अर सगळा आ जाणै के
नगरां में स्टेसणां माथै अर गांवां में स्टोपेज माथै
वांरी बाट उडीकणियौ भाग्य आंधौ इज है
(क्यूं के किणी नै घणौ अर किणी नै थोड़ौ मिळै है)।

सायद अेकाधा मिनट वास्तै
गाडी कठैई रुकैला अर आ कोई नीं जाणै
के चालै क्यूं नीं है ?
पाछी चलियां पछै यात्री आपरै मुकाम रौ
अंदाजौ लगाया करै है;
पण उणीज टेसण मथै घणौ मोड़ौ व्है जाया करै है।

⌘⌘

जलम : 31 मार्च 1914
निधन : 19 अप्रेल 1998

●मेक्सिकन

आक्टेवियो पाज़

लपट

आकारां अर प्रकास रा भग्नावसेस थांरी गैरी छियां नै
पूजै; प्यार, जिणरी पड़छांवळी कांनी
म्हारी हांपती सांस दौड़ै, अेक जींवतौ रूंख
जिकौ आपरी अणसफीट कड़कड़ाट सूं पैली
बीजळी री चमक री तरै ऊगै अर ऊठै है !
अेक देवता प्यार-गैळीज्यौ अर काळौ
नाम अर वाणीहीण जीवतौ देवता,
गै'री खामोसी नै गीत में बदळ देवै,
म्हारी कमजोर जीभ नै चीख में बदळै,
मंदगामी दुनियां नै लपट बणाय देवै,
जिकौ आपरी अगनमयी छातियां में फेर अेक
अणतिरपत, गुप्त अर भयंकर अगनी छिपायां है;

इण लपट सारू बुलबुल विलाप करै है,
टाबर, आकार, बीज रा तूफान, आंसू अर रुदन
रात नै पार करै, जठा तांई के वांरा
गुस्सै रा झागां रो प्रवाह धरती री सींव नीं तोड़ देवै;
दुनियां इणी जीवती लपट सारू मरै है,
प्रेम री महिमा में ऊंची ऊठनै, अर लुगायां
धरती माथै न्हाटती फिरै है, पागल घोड़ा आपरै
जळागारां री बजाय हिवड़ै री धड़कणां रा
काळा झरणां सूं पाणी पीवणौ दाय करै है,
जठा तांई के वै आपरी खतरनाक सांस सूं
म्हारै सरीर रै थिर प्रकास-तारै नै ढक नीं लेवै;

इण तीखी लपट रै सारू रगत बैवै है,
म्हारा कानां में अेक तूफान फाट पड़ै है,
म्हारी दाझ्योड़ी जबान गूंगी हुय जावै है
अर हिड़दै री धड़कणां रै पुळ माथै म्हां
मौत अर सूनियाड़ रै पूगण तांई दौड़ता रैवां हां;

इण गुप्त लपट री खातर
म्हैं दुनिया बुझाय दी,
जिकौ ई इणनै नीं चावै, उणनै म्हैं नस्ट करूं हूं,
छांवळ्यां रै बिचाळै म्हैं इणनै ओळख लेवूं हूं
अर इणरा रगत में सदाई रै वास्तै डूब जावूं हूं।

⌘⌘

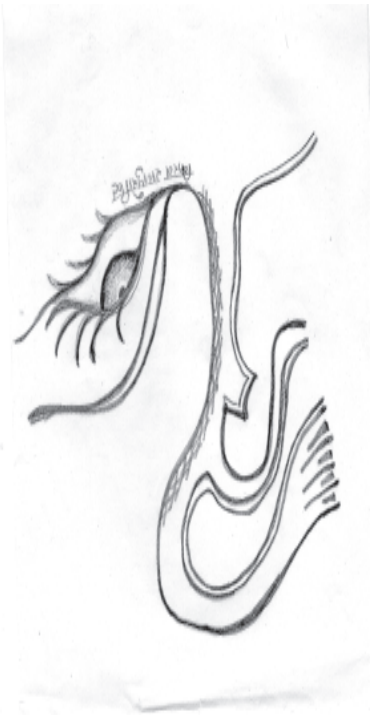

जलम : 7 अप्रेल 1889
निधन : 10 जनवरी 1959

●चिलीयन

गैब्रेला मिस्ट्राल

बुण रयी हूं अेक सरीर

अबै म्हैं सड़कां माथै नीं जा सकूं
म्हारी कमर मोटी हुयगी है,
आंख्यां नीचै गैरा काळा खाडा बणग्या है
आं सगळां नै निरख'र म्हनै लाज आवै
पण फूलां सूं भर्‌योड़ी अेक डोलची लाओ
अर म्हारै कनै, साव म्हारै कनै उणनै धरौ।
धीमै-धीमै बाजा माथै कोई मीठी धुन सुणाओ।
उणरै सारू, फगत उणरै सारू
म्हैं समदर में डूबणी चावूं,
म्हैं म्हारी देही नै गुलाब सूं सजावूं
अर उणनै सूवतां सुणावूं अमर गीत
कुंजां में बैठ'र घंटां म्हैं संचूं हूं सूरज रौ ताप
के म्हारै में फळां रै रस सरीसौ
इमरत (मधु) घुळ जावै।
चीड़ रा वनां सूं आवती हवा
म्हारै मुख नै हेमळ बणाय जावै,
उजास अर वायरौ म्हारै रगत नै जाडौ अर
सुद्ध कर दै
उणनै निरमळ बणावण सारू म्हैं अबै नीं तौ
घिन करूंला अर नीं गपसप। फगत प्रेम,
क्यूं के इण सांयत में, इण इकांत में म्हैं

बुण रयी हूं अेक सरीर
तूंतड़ा सूं बणी अेक अद्‌भुत देही,
अेक चे'रौ, आंख्यां
अर हिवड़ौ निपाप।

⌘⌘

(हेमांणी, परंपरा विशेषांक / ज्ञानोदय)
हिंदी अनुवाद : स्नेहमयी चौधरी

हरेक चीज सारू म्हनै माफ कर दौ!

उण सारू, फगत उण सारू
जिकौ घास में अटक्योड़ी जळ-बूंद री भांत
अळसाय'र
सूवण इज वाळौ है, म्हनै चोट मत पुगावौ
म्हनै काम करण सारू मत कैवौ।
हरेक चीज सारू म्हनै माफ कर दौ,
भलांई वा मेज सजाणै रै तरीकै माथै म्हारी
झूंझळाट हुवै या हाकै रै प्रति म्हारी नफरत
म्हनै पैली उणनै ओढाय'र सुवावण दौ
पछै थे म्हनै बताईजौ घर री मुस्किलां,
चिंतावां अर काम,
म्हारै माथा माथै, छाती माथै जठैई थे म्हनै
भींटौ हो, वौ है
अर वौ टस्कण लागैला
जे थे म्हनै चोट पुगावोला।

⌘⌘

जलम : 7 नवंबर 1901
निधन : 9 नवंबर 1964

●ब्राजीली

सेसीलिया मिरले

ओळख

आ म्हारी जिंदगाणी है :
ऊजळी रेत
बैवती बणगटां सूं आंक्योड़ी
पून नै समरपित....

आ म्हारी वाणी है :
खाली घोंघौ
ध्वनि री प्रतिध्वनि
आपरै इज रुदन सूं पूरण....

आ म्हारी पीड़ है :
टूट्योड़ी सीपी
आपरै दुख रा छिण पार करती....

आ म्हारी परंपरा है :
अेकलौ समदर
जिणरै अेक कांनी हो हेत
दूजी कांनी है भुलाव।

⌘⌘

(हेमांणी, परंपरा विशेषांक / ज्ञानोदय 6/66)
हिंदी अनुवाद : महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

●ब्राजीली

जलम : 26 जुलाई 1895
निधन : 14 जनवरी 1974

कैसियानो रिकार्डो

दूजौ जीवण

म्हनै इणरै पछै
किणी दूजै जीवण री आस नीं है।
जे औ जीवण भूंडौ है
तौ म्हैं इणमें जिका-जिका दुख भोग्या हूं
उणनै देख देवता राजीज हुवैला।
जे औ जीवण चोखौ है
तौ उणनै दोवड़ावण सूं
इणरौ सुख खतम नीं हुय जावैला।

⌘⌘

जलम : 15 अक्टूबर 1934
निधन : 10 मई 1996

●डेनिस

पॉल बॉरम

भुलाव

कीं ई घटै कोनी सिवाय
कोरा पत्ता झरै
अर हुय जावै फालतू
मतलब भेळा हुय जावै उणीज पोथी में
वा पोथी
जिणनै कोई नीं बांचै
दरवाजां रै बारै
आपरी नानकड़ी मौत मर रया है रूंख।

⌘⌘

(हेमांणी, परंपरा विशेषांक)

●हिन्देशियाई

जलम : 26 जुलाई 1922
निधन : 28 अप्रेल 1949

चयरिल अनवर

थोथप

बारै सांयत है। घिरयौ आवै है अेकलपणौ
रूंख नीचै सूं ऊपर तांई सीधा, चुप ऊभा है।
सांयत मूंडौ ढेरयोड़ी है,
इणनै चीरणवाळौ कोई कोनी। हरेक चीज
बाट उडीकै, बाट उडीकै
आपरै अेकलपणै में इज
जिकौ गैलौ कर देवै, तोड़ देवै
जठा तांई के सगळौ-कीं टूट-फूट नीं जावै।
किणनै परवा है
के हवा जैरीली हुयगी है। सैतान हंस रैयौ है।
अेकलपणौ खतम को हुवै नीं। बाट उडीकूं हूं।

⌘⌘

विदा

म्हैं काच में देख रयौ हूं।
चैरौ घावां सूं भर्‌योड़ौ है।
किणरौ है औ ?
म्हैं अेक पुकार सुण रैयौ हूं।
—म्हारै हीयै में ?
अथवा आ फगत हवा री चीस है ?
बीचली रात में फेर
औ गीत पसरतौ जावै है
आह.... !!
हरेक चीज जमती जावै है,
करड़ी हुवती जावै,
म्हैं कीं नीं जाण सकूं।
विदा.... !!

⌘⌘

●मैक्सिकन

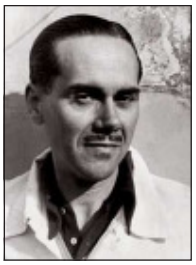

जलम : 21 सितंबर 1902
निधन : 5 नवंबर 1963

लुई कारनूदा

घणा पैली रौ बसंत

अबै इण सिंझ्या रै बैंगणी सूरज-आथमणै में
जद फूलां में पड़ी ओस सूं मैग्नोलिया भींज्योड़ा है
वां सड़कां सूं गुजरणौ, आभै में चांद नै
बधतां निरखणौ, अेक जागतै सपन सरीसौ हुवैला....

पंखीड़ां रा टोळा आपरै विलाप सूं आभै नै
पसार देवैला, फंवारै रौ जळ आपरी सुधता सूं
धरती री गैरी आवाज नै ऊपर बिखेरैला
अर तद आभौ नै धरती अेकदम चुप हुय जावैला....

निजनता रै किणी खूणै में, अेकला आपरौ माथौ
आपरै हाथां में लियां, प्रतिहिंसक प्रेम री गळाई
थे औ सोच-सोचनै रोवता रैवोला के
जिंदगाणी कित्ती फूटरी ही अर कित्ती फालतू....।

⌘⌘

(हेमांणी, परंपरा विशेषांक)

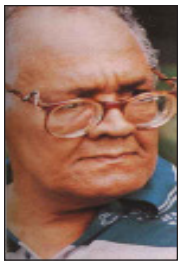

जलम : 7 जून 1927
निधन : 13 दिसंबर 1997

●कामनवेल्थ
(ब्रिटिश गायगा)

मार्टिन कार्टर

अगनी पुसप! थूं पाछौ आव

पंखीड़ा री गैरमौजूदगी में,
अेक सदाबहार रूंख रै लारै
मेह भींज्या सूरजाथमण रै साथै
अेक संपूरण आकास आथम रैयौ है।
मरुथळ में डूबतै ओळूं रै समदर री भांत
जळ रा बडा-बडा होदिया सड़क माथै बणग्या है
मेहुड़ै नै जीतणै री सूरज री नादान कोसिस
बेकार सिद्ध हुयगी है।
इण वास्तै हे अगनी पुसप!
पून री पांखां माथै बैठ'र
थूं पाछौ आव!
वौ जिणनै थे माणक कैवौ,
मौत है।
अर समदर रै सूख्यां पछै
तळ री बालुका में मौजूद है
उजास रा प्राण किणी दूजी जगै रैवै
बिरखा अर किणी रूंख रै नैड़ा,
जद अै दोन्यूं आपसरी में अेक हुवै।

औ फूटण वाळी पैली कूंपळ!
अर खिरतोड़ा छैला फळ!
जद पकड़णै रै पैली इज थूं
पून नै दिरीजगौ है
आभौ फगत इण सारू फूल्यौ
के मिनख सरू कर दियौ बधणौ;
जळ रा किनारां माथै, जठै भाटा पड़ै
अर डूब जावै,
देखी सूरतां नै आत्मावां में बदळतां
मतलब, अेक घोंघौ सबद में बदळग्यौ।
अगनी पुसप! थूं पाछौ परौ आव, पाछौ
नू री हथेळ्यां माथै बैठनै।

⌘⌘

(ज्ञानोदय 2/67)
हिंदी अनुवाद : परेश

जलम : 1945
निधन : 1991

●**कामनवेल्थ**
(वेल्स)

पॉल इवान्स

धोळी सिलावां री घाटी

जद वा आपरी पिंडल्यां नै
अेक दूजी रै माथै धरै
मांस रा दोय पीळा चंदरमा उदै हुवै
उणरी हरी जुराबां रै ऊपर।
पछै वा कुरसी सूं ऊठै
अर वै पीळा चंदरमा
काळा जळ में डूब जावै
म्हैं दरूजै तांई उणरौ लारौ करूं।

धोळी सिलावां री घाटी
अर उण माथै रपटती चांदणी,
यानी के चांदी रै झरणै में
अेक माछळी।

अबै वा म्हारी मीट नै
अेक डोरै सूं बांधनै
आपरा सुगोळ स्तनां रै च्यारूं कानी
पळेट लेवै
अर यूं
अनेकूं जिनावरां रै बिचाळै घिर जावै।

यां धोळी सिलावां रै बीच
काळा घोड़ा अर गेंडा चरण लागै।
झरणै री चादर में
म्हैं उणनै पळेट लूं
अर वौ पाणी म्हारै में समाय जावै।

म्हैं पाणी हूं,
म्हैं अठै पैली ई आयौ हो।
उणरी हरी जुराबां रै ऊपर।

⌘⌘

(ज्ञानोदय, 2/67)

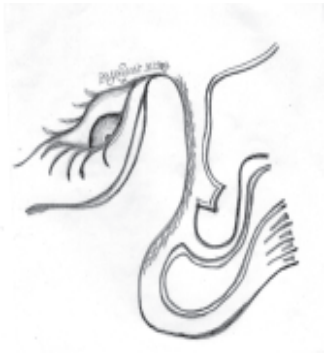

चित्राम
अर
कवि-समै री
जाणकारी
नीं मिल सकी

●कामनवेल्थ
(केन्या)

जे. एच. चेपलीन

उपद्रववाळौ क्षेत्र

वै लोग म्हारी झूंपड़ी बाळ दी है।
अजाण्या कोनी हा वै लोग,
अर नीं पुलिस रा सिपाई
वै सरकार रा भेज्योड़ा पाड़ोसी हा।
क्यूं नीं कैवूं म्हैं वांनै मित्र ?
वै म्हांरा मित्र कियां कोनी ?
अेक इज नाळा माथै दोनूं गांव पाणी भरै
म्हे वांरी मौत माथै सोग मनावां
वै म्हांरा ब्यावां री जीमणवार में भेळा हुवै।
पछै वै म्हारी झूंपड़ी क्यूं बाळ दी ?
पूरौ छपरौ लाय पकड़ली है
पड़तोड़ी छत री बल्लियां चाय रा सगळा कप तोड़ दिया।

मेजां अर कुरस्यां बळगी है
अेक कामळ में दबक्योड़ो
म्हैं बारै बैठौ हूं
अर म्हारी झूंपड़ी बळ रैयी है।
⌘⌘

(ज्ञानोदय 2/67)

●रूसी

येवजेनी येवतुरोंको

जलम : 18 जुलाई 1932

ईसकौ

म्हनै ईसकौ है
अर औ भेद
म्हैं छिपायो कोनी।
म्हनै ठा है—
कठैई रैवै अेक टाबर
जिणसूं म्हनै ईसको है—
क्यूं के बो झगड़ाखोर है
म्हैं नीं हो कदैई
इत्तौ सैज, हिम्मती।
म्हनै ईसकौ है
उणरी हंसी माथै—
म्हैं नीं हंस्यौ यूं टाबरपणै में
बो चींथरां में राजी हुयोड़ौ घूमै।
म्हैं रईसी में पळ्यौ
जिकौ नीं बांच सक्यौ म्हैं
पोथ्यां में—
वौ उणनै जरूर बांचैला
इणमें ई वौ म्हारै सूं बधगौ।
वौ हुवैला सांचौ अर साफ दिल
चोखापै रै सारू भूंडापै नै

कदैई माफ नीं करैला
अर जठै म्हारी कलम
अटकै—
''फालतू है....।''
वौ कैवैला—
''फालतू कठै....।''
अर कलम उठावैला
सुळझावैला
नीं हुयौ तौ काट देवैला
अर म्हैं
नीं सुळझावूंला, नीं काटूंला।
वो चावैला तौ अेक वार
म्हैं लाड (?) करूंला
अर बारंबार
ईसकै नै छिपाऊंला
मुळकूंला
अर जाणूंला, जाणै कीं नीं जाणूं
सीधौ हूं।

''कुण गलती नीं करै
किणसूं चूक नीं हुवै....''
खुद नै समझाऊं
बारंबार दोवड़ाऊं—
''हरेक रौ आपरौ भाग है।''
पण भूल नीं सकूं
कठैई है अेक टाबर
जरूर प्राप्ती करैला वत्ती
म्हारै सूं वत्ती।
⌘⌘

(हेमांणी-परंपरा विशेषांक / ज्ञानोदय 1/69)
हिंदी अनुवाद : हेमचंद्र पांडेय

●रूसी

अलेक्सेई सुर्कोव

जलम : 18 जुलाई 1932

इतिहास

छितिज तांई विसाळ समतळ भोम,
आथम्योड़ै सूरज री लाली में अगनी रौ उजास
नींद लेवतौ चित्तौड़ ऊभौ है हरियल ढळांस रै कांठै
मेवाड़ रै बीतोड़ै गौरव रौ रक्षक।

पारवाणां, भींतां सूं फूटतौ विलाप,
विजै-स्तंभ चित्तौड़ रौ, कदळी सूं घिरयोड़ौ—
ऊंचै मस्तक नै थिर कर
अणंत सूं बातचीत में लीन।
मिलन-बेळा में इतिहास दोवड़ावै
कथा दुस्मण रै कपट री, नकल री,
चिंघाड़ गजां री
हिणहिणाट तुरंगां री
गूंजण लागै कानां में।

जीवै है टूटा-पड़्योड़ा मकानां में मिरतु अर नास—
जिका घट्या है राजपूताणा में।
पून री हिलोर सूं बाजण लागै
घंटियां जैन मिंदरां री।

पड़्योड़ा मकानां नै ढकती धूड़,
अलोपित घाटी री हरियाळी में।
बूढो राजपूत शिव रा चरणां में
नासकाहीण ईसर री वंदना में लीन
मीट जमाय निरखै
तकदीर कांई कैवै....
सुणौ बा'सा! अठै इज है थांरा बेटा,
अर साथै है जवान भारत!

⌘⌘

(हेमांणी-परंपरा विशेषांक / ज्ञानोदय 1/69)
हिंदी अनुवाद : हेमचंद्र पांडेय

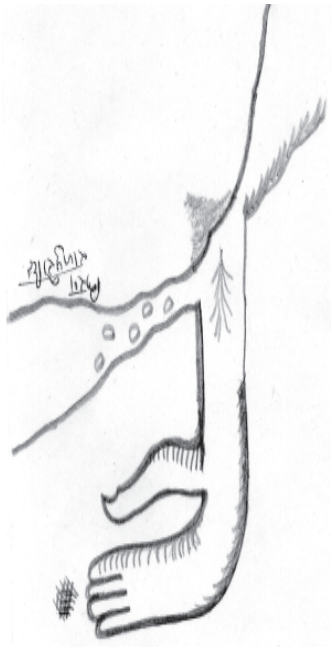

●अरबी

जलम : 7 अगस्त 1165
निधन : 16 नवंबर 1240

इब्न-अल-अरबी

अरदास

रात रौ काळौ पड़दौ पड़गौ
इसी बगत में वै आपरी यात्रा सरू करी।
म्हैं अरदास करी—
''औ प्रेमी पागल है, मतवाळौ है,
अपमानित है।
दया कर!
लालसु इच्छावां इणनै अणूतौ दुखी करै।
जठीनै ई इणरा निबळा पग बधै
उठी सूं तीखा बाणां री बिरखा हुवण लागै....।

वै मुळक बिखेर दी
अर भळकगी बीजळी
फाटगौ काळौ पड़दौ।
कुण फाड़्यौ?
मुळक अथवा बीजळी?
म्हैं नीं जाण सक्यौ।
वांरा स्वर हा—

''म्हैं उणरै मन-मिंदर रौ वासी हूं।
वौ हर पल म्हारा दरसण करै है।
पूरौ कोनी कांई इत्तौ ?
पछै थांरी अरदास किसी ? क्यूं ?

⌘⌘

(नवनीत 6/68)
हिंदी अनुवाद : संतकुमार टंडन 'रसिक'

●हंगेरियन

जलम : 5 मई 1909
निधन : 9 नवंबर 1944

मिकलोस रादनोती

कविता रै अनुकूल घर

घिरै है धुंधळको, तिरै है दुस्टी तारां सूं घिरयोड़ौ
घेरौ बळूंत रौ, ऊठयोड़ी झूंपड़ी—
सगळा रा सगळा लुकण सारू इण बेळा
अंधारै में
होळै-होळै सगळां नै चीरनै कैदी रौ सपनौ
उलांघै है असभ्य भींत नै.... जे तौ ई
भूल नीं रयौ वौ
घणा आघा-आघा तांई फैल्योड़ा तार नै।

औ म्हारी प्रियतमा!
बेलगाम सपना इज
म्हांनै वौ चैन दै सकै
जिकौ टूटोड़ा पांख अर चूंथ्योड़ी देह नै
कर देवै पाछी आजाद; ढीली
कर देवै सांकळां अर डेरां में लोग
तैयारी करै
आपरै घरबार री—

अंधार-घोर
गळियां में भागै है, खर्‌राटा भरतोड़ा
सर्बिया रा सिखरां सूं पाछा आयोड़ा
टूटोड़ी देही अर मूंड्योड़ा माथा
बंदी—
सगळा रा सगळा दौड़ै है
घोर अंधकार में
आघी मायड़भोम मांय
ऊठै भुजावां हरेक बारणै में।
सगळां रा नैनकिया सपनां में बावां उचायां
ऊभा है घर।
साचाणी साबत है कांई
आपणौ नगर?
कांई हाल तांई पड़्यौ नीं बम?
म्हे वांनै कैय'र आया हा—
थांनै देवणौ है उत्तर।
म्हारै जीवणै पासी जिका टसकै है
म्हारै डावै पासी जिका
घरै जावणी चावै है—
उणांनै कांई कैवूं? कैय दूं
घरै जावै?
कांई हाल ही अखंड है
घर म्हारी कविता रै
अनुकूळ?

मूंन, अंदाजै सूं लिखूं हूं अेक कविता रै तळै
दूजी री ओळी :
जीवूं हूं घिरयोड़ौ खुद रा इज दुख मांय
लिखूं सिरकतौ, हकलावतौ, मिनमिनाय'र
ज्यूं कागद माथै मारग बणावतौ कीड़ौ।
खोसीजगी है मसालां अर पोथ्यां;
दुस्मण रा संतरी खोस नै लेयगा सैंग,

चिट्ठी ई बंद, कोरौ कोहरौ, फगत
धुंध ढकी झूंपड़ी।

पोल अर फ्रेंच, यहूदी अर ऊपरी बकबक करणिया इटालियन,
बागी सर्ब—सगळां रै जीवण में,
अठै आं परबतां रै मांय,
बच्योड़ी रैयगी है बस जूंआं अर अफवावां
फूटग्या है गोडां सगळां रा
टूटगी है सगळां री बावां—
सगळा फगत 'अेक जूण' जीवै है
बाट उडीकै है—
आवती व्है स्यात् खुसखबरी, आवता व्है
स्यात् संदेसा
सुंदरियां रा,
स्वाधीन लोगां रा!
बाट उडीकै है कोहरै में छिप्योड़ै अंत री
बाट उडीक रया है
लोग चमत्कार री।
काठ रा पाट्यां री सेज है; म्हैं अेक
पींजरा में बंद पसु, जोखां लोही पीवै है।
म्हैं सुण्यौ हो अंधारै में माख्यां
नीं हुया करै— म्हारै अंधारै में है
हमलावर माख्यां।
होवै है सिंझ्या अर कैदी रौ अेक
दिन फेर बीत जावै है। छोटी है
जिंदगाणी। सूतौ है डेरौ। चांद री
खिल्योड़ी है कळावां प्रदेस माथै— घेरा रा
तार औरच्यूं भी चमकै है—
डेरा रै मून में पगध्वनि रै साथै
साफ-साफ दीसै है
काळी भींत माथै
संतरी री छांवळी।

ओ म्हारी प्रियतमा! कांई तूं जाणै है—
सगळा ई सूता है, सपना
छोडगा है म्हांनै,
छिण भर सारू नींद टूटै है
अर चांदणी में चैरौ
चमकै है
पण दूजै पल पाछौ
नींद भरयौ अंधारौ!
फगत म्हैं जागूं हूं
मूंडा में स्वाद है, थारा चुंबनां रौ नीं
बुझ्योड़ी सिगरेट रौ
म्हैं जाणूं हूं— नींद
म्हारौ भाग्य नीं है
म्हारौ भाग्य थूं है
म्हैं मरूंला नीं थारै सूं न्यारौ
थारै बिना भूलूं हूं
जीवण रौ ढंग।

⌘⌘

पिक्चर पोस्टकार्ड

बुल्गारिया सूं जबरदस्त जंगळी
बंदूकां री गोळियां आवै—
सिखरां सूं भचीड़ा खाय, भटकनै, पितळनै
गायब हुय जावै—
घिर जावै मिनख, डांगर, बैगन अर विचार
मारग हिणहिणाय'र
लारै सिरक जावै
आपरा अयांळ उडावतौ
न्हाट जावै आकास!

सगळौ तितर-बितर हुय रयौ है।
अैड़ा बगत में थूं! म्हारै मांय बठै इज रैय जा
जठै ही, हिल मत
म्हारै मांयली गैराइयां में
मून रै अर सदा पळक
ज्यूं सरबनास माथै अचरीज्यौ कोई
फरिस्तौ अथवा सिड़्योड़ै रूंख में
कंदरा बणावतौ कोई कीड़ौ।
नौ कोस आघा बळ रैया है
झूंपड़्यां अर घर
अर अठै खेतां री मेड़ माथै अचरज करता
करसा धुंऔ उडावता बैठा है चुपचाप!
बाजै तळाव रै जळ माथै
गुवाळण छोरी रै पगां री छाप
सरणाटौ तोड़ती भेड़ां जळ-झुक्योड़ी
पीवै है मेघ।
बैवै बळदां रै मूंडै सूं रगत-भिळी लाळां
फालौ हुयग्यौ खून सूं
मिनख रौ पेशाब;
पीप-भर्‌यै असभ्य टोळै सूं घिर्‌योड़ौ
ऊभौ है
गुलाब!

म्हैं उणरै पछै हो! गरदन माथै गोळी
अर उणरौ सरीर गुड़ग्यौ
अेक नुच्योड़ी माळा रै दाणै सरीसौ
'थूं ई मार्‌यौ जावैला यूं' म्हैं
खुद नै कयौ, 'सूय जा चुपचाप!
अबै फगत धीरज बदळ सकै
मौत नै
धूड़ में 'डियर स्प्रिंग नोख

ऑफ़' अवाजां आतां, आतां, आतां
आयी नैड़ी
रगत घुळ्योड़ौ कादौ सूखगौ
म्हारा कानां में !

⌘⌘

(हेमांणी, परंपरा विशेषांक / ज्ञानोदय 4/66)
हिंदी अनुवाद : श्रीकांत वर्मा

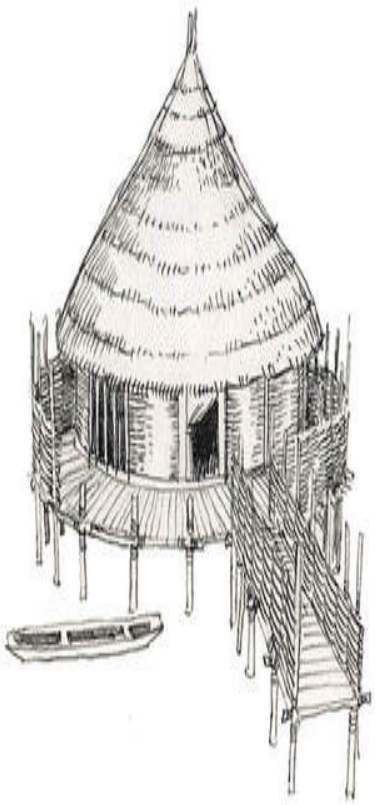

●पेरू (स्पेनिश)

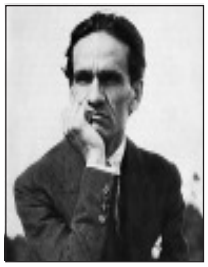

जलम : 16 मार्च 1892
निधन : 15 अप्रेल 1938

सेजार वेलेजो

तीन कवितावां

अेक

अेक मिनख है
बैठ'र खाज खिणै
अर आपरी कांख सूं
अेक जूं काढ'र मार देवै
कांई इण बगत 'मन फांटणी' माथै
बात करण रौ कोई अरथ हुय सकै ?

दूजोड़ौ मिनख म्हारा सीना माथै
मुक्कौ मार दियौ
कांई म्हैं किणी डाक्टर कनै जाय'र
'सुकरात' माथै तरक करूं ?

अेक लंगड़ौ मिनख
अेक नैना टाबर नै स्यारौ दियौ
इण पछै ई
'आंद्रे ब्रेटन' नै पढणौ जरूरी है कांई ?

अेक मजूर डागळै सूं पड़ जावै
अर लोगां रै कलेवा रै वगत सूं पैली
मर जावै
कांई औ वगत किणी नुंवै छंद अथवा राग रै
संधान रौ है ?
अेक अपंग आदमी
कांधै माथै पग धरनै सूवै
अबै ई म्हैं किणी सूं
'पिकासो' बाबत बात करूंला कांई ?
(हेमांणी, परंपरा विसेसांक)

दो

फगत म्हैं इज अेक इस्यौ मिनख हूं
जिकौ सगळौ-कीं लारै छोड'र
कठैई आघौ जाय रयौ हूं

आघौ इण बेंच सूं
म्हारा अंतस रा पड़दां सूं
साधारण व्यवस्था सूं
म्हारी रोजीनां री जिंदगाणी सूं
टूटोड़ी नेम प्लेट सूं
फकत म्हैं
दूजौ कोई नीं
अेकलौ म्हैं इज सगळां सूं आघौ
जाय रयौ हूं।

म्हारी खुद री मौत ई
म्हारै सूं न्यारी हुय रयी है
अठा तांई कै
म्हारा बिछावणा ई 'जैरामजी री' कैय रैया है।

म्हारौ 'म्हैं' ई अेकलौ अर आजाद
घूमण सारू रवानै हुयगौ है
अर प्रेतां सूं मुगती पायली है।

अेक-अेक करनै
म्हैं सगळी चीजां सूं 'विड्रा' कर सकूं हूं
क्यूं कै अै सगळी चीजां
लारै छूट जावैला।

जद म्हैं आ साबित करणी चावूंला
के ''जिण वगत कतल हुय रयो हो
म्हैं उठै नीं हो।''
म्हारा जूता, जूता रा छेकला, कादा-कीच
अठा तांई के म्हारी ऊजळी
इस्त्री करयोड़ी कमीज रा चमकता
बटणां तांई लागोड़ौ कादौ
इण बात नै पुख्ता करैला
के कतल म्हैं इज कियौ हूं।

तीन

म्हैं पेरिस में मरूंला
घणघोर बिरखा रै बिचाळै
वौ दिन म्हारी याद में
अबार सूं इज तै हुयगौ है
म्हैं पेरिस में मरूंला
इण बात नै
कीकर नकारी जा सकै।
गुरुवार नै
क्यूं के आज गुरुवार नै
म्हारी कवितावां इत्ती गद्यात्मक हुयगी है
अर म्हारा हाडकां में इत्तो दरद हुय रयौ है

जैड़ौ पैली कदैई नीं हुयौ
नीं म्हैं पैली कदैई
इत्तौ आघौ घूमण नै गयौ
नीं पाछौ आय'र आज सूं पैली
म्हैं खुद नै
इत्तौ अेकलौ मैसूस्यौ।
सेजार वेलेजो मरगौ है
सगळा जणा मारौ उणनै
अर वौ पडुत्तर में
कीं नीं कैवैला
आ वौ इज जाणै है
के उणनै कित्तौ सताइज्यौ गयौ है।

दूखता हाडका
अर औ गुरुवार साखी है।
औ अेकलपणौ
बिरखा
अर अै लांबी सड़कां
इण बात री प्रमाण।

⌘⌘

इण अंक रौ मुखौळ

इण अंक रौ मुखौळ खुद पारस जी रै हाथ सूं बणायोड़ौ अेक चित्राम है। 1965 में 'जाणकारी' रै प्रकासन सूं पैलां वै 'चौमासी' नांव सूं अेक पत्रिका सहयोग प्रकासण, उदयपुर सूं काढणी चावता। औ चित्राम वै खुद उण पत्रिका रै मुखौळ सारू बणायौ। कवर रै आखिरी पेज माथै इण अंक री विगत भी पारस जी री लेखनी मांय दिरीजी है। आ पत्रिका सांमी नीं आ सकी, पण औ मुखौळ पत्रिका रै उण कंवळै सपनै नै समरपित।

●जर्मन

जलम : 1 फरवरी 1874
निधन : 15 जुलाई 1926

ह्यूगो वान हाफ़मान्स्थल

निजू भासा

ऊग्याई है भासा थांरा होठां माथै
साथै-साथै, ऊग्याई थांरा हाथां में अेक सांकळ
खींचो! आखै जगत नै उणसूं आपरै कांनी खींचो
नींतर थे खुद परबस खींच लिया जावोला!
⌘⌘

जलम : 30 अक्टूबर 1885
निधन : 1 नवंबर 1972

●अमरीकन

अेजरा पाउंड

समापन रा बोल

ओ म्हारा गीतड़लां
इत्ती गैराई अर जिग्यासा सूं
    क्यूं देखौ हो थे
    लोगां रा चैरां में
वां में थांनै आपरा बीतोड़ा मिळ जावैला कांई ?
(हेमांणी-परंपरा विशेषांक)

⌘⌘

अेक छोरी

अेक रूंखड़ौ म्हारा हाथां में समायगौ है
मांवो-मांय रूंख-रस चढ रयौ है म्हारी बावां में
रूंख म्हारा सीना में ऊग्यायौ है
अंतरमुखी,
ऊग रया है म्हारै मांय सूं— भुजावां री गळाई
वौ रूंख थूं है
थूं है वा जळ-लील
वै बैंगणी रंग रा फूल थूं है ज्यां माथै पून लैरावै
थूं है— अेक छोरी अर इत्ती ऊंची
अर देख तौ सरी
दुनिया रै वास्तै आ फकत अेक नादानी है।

⌘⌘

जलम : 17 सितंबर 1882
निधन : 4 मार्च 1963

●अमरीकन

विलियम कार्लोस विलियम

जीवणकाळ

अेक मुड़ियौ-मुचियौ बडौ सारौ
बिदामी कागद
लंगै-ठंगै मिनख जित्तौ
अर मिनख बरोबर घेराव वाळौ
गुड़क रयौ हो
हवा रै साथै
उल्टीजतौ-पल्टीजतौ बारंबार
जद आगै सड़क माथै
के अेक मोटर सर्र् करती
गई परी उणनै
किचरती थकी
जमीं माथै ! अर सागैसाग
मिनख ज्यूं, वौ
पाछौ ऊभौ व्हैग्यौ
गुड़तौ-पड़तौ
हवा साथै आगै बधतौ सागैसाग
पैली ज्यूं।

⌘⌘

●अमरीकन

जलम : 29 मई 1892
निधन : 25 अक्टूबर 1938

अैल्फ़ाज़िना स्टार्नी

बडेरां री पीड़

थे बतायौ— ''म्हारा बापू री आंख में
कदै आंसू नीं आवता।''
थे बतायौ— ''म्हारा दादोसा री आंख में
कदैई आंसू नीं आया।''
''म्हारी जात रा बणावणिया—म्हारा बडेरा
वै कदैई रोया कोनी : वै फौलाद रा हा!''
इत्तौ कैवतां-कैवतां थांरी आंख्यां सूं आंसूड़ौ ढळकगौ
अर म्हारै होठां माथै टपकगौ— इत्तौ तीखौ हळाहळ
इत्ता नैनकड़ा प्याला में म्हैं कदैई नीं चाख्यौ हो
म्हैं निबळा नारी, परबस नारी
जिकी जुगां री संच्योड़ी पीड़ नै
समझगी उणनै पीय'र
म्हारी आतमा उणनै नीं कर रयी बरदास
उण पीड़ रै बोझ सूं तिलमिलाय उठी है।

⌘⌘

जलम : 7 दिसंबर 1909
निधन : 23 जुलाई 1942

●बलगेरियन

निकोला वाप्सारोव

इतिहास रै नांव

म्हे गुमनाम रचनाकार हां
थे म्हांरो जिकर करोला
खुद रै किणी पानै माथै, म्हांरौ ई नांव लिखोला ?
कांदौ अर रोटी सूंघ'र म्हां इण खेत नै
जोतता रैया।
अर जिंदगाणी रै नांव माथै फटकार देता रैया
खैर मनावौ के म्हां थांनै केई खबरां देवता रैया
थांनै इणरी तिरस ही, म्हां खुद रौ रगत बैवावता रैया
आवणिया कवियां री कलम विकास रा गीत लिखैला
पण
यातनावां री लंबी कथा अणलिखी रैय जावैला
म्हांरी जिंदगाणी रौ कीं अरथ नीं है कांई ?
अेक जै'र री खारास है— बस
औरयूं म्हांनै कीं नीं कैवणौ
कांटां री अेक बाड़ ही, जिणरी छींयां झूलती रैयी
अर म्हांरी मा
म्हांनै जलम देय'र पीड़ में घुळती रैयी
पतझड़ में म्हां माखियां ज्यूं मरग्या
मायड़ियां रै विलाप नै फगत जंगळी पत्ता इज सुण सक्या
जिकौ ई बाकी बचग्यौ

वौ पसेवै सूं रगदाबगद हौ
म्हांनै बळदां ज्यूं जोत लियौ गयौ
बडा लोग बोल्या— ''औ इज अरथावू जीवण है।''
पण म्हांरौ दोस औ इज है
के म्हां इण दरसण माथै थूक दियौ
इण दुख री पीड़ री कीमत म्हां नीं मांगां
म्हांनै बदळै में
किणी मुआवजै, प्रसिद्धि री जरूत कोनीं
नीं ई म्हां कैलेण्डर री तस्वीर बणणी चावां
बस
जिका म्हांरै पछै आवै वांनै इत्तौ इज कैईजौ—
अेक जिंदगाणी, अेक कल्पना, अेक मूरत म्हां घड़ता रैया
अर उजास खातर अंधारै सूं लड़ता रैया।

⌘⌘

(पहल 14/5)
हिंदी अनुवाद : राजीव शुक्ल

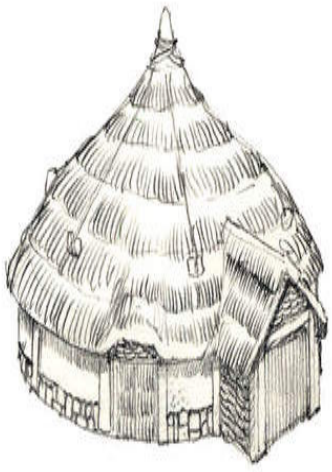

✍गोरधनसिंह शेखावत, सीकर (साहित्यकार)

आपरै पिताजी रै सुरगवास री खबर सुण'र म्हनै घणौ दुख हुयौ। पारस जी म्हारै घणा नैड़ा हा। 'अपरंच' रै पैला अंक मांय म्हारी रचना छपी, उण बगत म्हैं पिलानी पढतौ। पछै तो पारस जी सूं लगातार सम्पर्क रैयौ। 'राजस्थानी अेक' पत्रिका मांय पारस जी भी म्हांरै साथै हा। वांरी सोच अर सिरजणा राजस्थानी साहित्य सारू नुंवी अर गंभीर ही। अबार तांई भी वांरा फोन बराबर आवता। आज भी म्हारै हियै मांय वांरी याद ताजा है। म्हैं भगवान सूं प्रार्थना करूं कै वै वांरी दिवंगत आत्मा नै सांति अर आपरै परिवार नै इण दुख नै संभाळण री खिमता देवै।

✍भरत ओळा, नोहर (साहित्यकार)

प्रिय गौतम, काल थारै एस.एम.एस. सूं औ दुखदाई समाचार मिल्यौ। थांनै हिम्मत बधावण सारू म्हारै कनै सबद नीं है। पारस जी रौ इयां जावणौ चबका मारै पण पारस जी हमेस आपां रै बिचाळै रैवैला ज्यूं पैली हा। पारस जी हमेस म्हारौ बेटै दांई लाड राखता, भोळावण देवता रैवता, ''भरत थूं इयां कर.... भरत थनै इयां करणौ चाईजै....।'' वै सौ टंच प्रगतिसील रचनाकार हा। जावता-जावता ई वां आपरी प्रगतिसीलता बणायां राखी। आप वांरै विचारां रौ मान राख्यौ अर वांरी विरासत नै संभाळी, आ घणी थ्यावस अर हरख री बात है। पारस जी राजस्थानी भासा रा साचा सपूत हा अर राजस्थानी भासा नै मान्यता दिरावणी ईज वांनै साची सिरधांजळी व्हैला।

✍रेखानंद बरोड़, बुकनसर छोटा (किसान नेता)

दु:खद समाचार पोथी मांय बांच्यौ। घणौ जीव दोरौ हुयौ। म्हारी मायड़ भासा मांय लिखणै-पढणै री हूंस वांरी ईज देन है। अबै आपनै वांरी सारी जिम्मेवारी संभाळ'र मायड़ भासा री सेवा करणी है। राजस्थानी रा साचा जनवादी साहित्यकार नै म्हारौ लाल सलाम।

✍गजेसिंह राजपुरोहित, अध्यक्ष राजस्थानी विभाग (जेएनवीयू, जोधपुर)

आपरै पिताजी रै सुरगवास रौ दुखद समाचार मिल्यौ। पारस जी राजस्थानी रा लूंठा साहित्यकार अर विद्वान हा, वांरी कमी हमेसा रैवैला। म्हैं अर वि. वि. रौ राजस्थानी विभाग वांनै निवण करां। ईश्वर सूं अरदास है वांरी आतमा नै सांति अर आपनै इण दुख नै संभाळण री खिमता देवै। जै राजस्थानी।